RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 37 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 25 नवम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 37, 22-25 नवम्बर 2018 तदनुसार 10 मार्गशीर्ष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

कर्म-फल-प्रदाता

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

विभूषन्नग्न उभयाँ अनु' व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे।
यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव।।

-ऋ० ६।२५।१

शब्दार्थ- अग्ने = सब गुणियों को सत्कृत करने वाले सर्वज्ञान-निधान भगवन्! **देवानाम्** = देवों का **दूत** = दु:खविनाशक होता हुआ **उभयान्** = देवों और मर्त्तों को, निष्काम ज्ञानी तथा साधारण मनुष्य को, जीवन्मुक्त तथा मृत्युग्रस्त को **व्रता+अनु** = उनके कर्मों के अनुसार **विभूषन्** = विभूषित करता हुआ, उत्तम गति देता हुआ, तू **रजसी** = दोनों लोकों को **सम्+ईयसे** = एकरस व्याप रहा है। **यत्** = यत: **ते** = तेरे **धीतिम्** = ध्यान तथा **सुमतिम्** = उत्तम ज्ञान को **आवृणीमहे** = हम स्वीकार करते हैं, धारण करते हैं, **अध** = अत: **त्रिविरूथ:** = तीनों में श्रेष्ठ तू **न:** = हमारे लिए **शिव:** = कल्याणकारी **भव** = हो।

व्याख्या-इस मन्त्र में भगवान् का कर्मफलप्रदातृत्व निरूपण किया गया है-**'विभूषन् उभयां अनु व्रता'**-दोनों को कर्मों के अनुसार सजाता है। संसार में पापी और पुण्यात्मा दो प्रकार के मनुष्य हैं, दोनों की वासनाओं में भेद के कारण उनके कर्मों में भेद होता है। भगवान् उन दोनों के कर्मों के अनुसार ही उनके लिए सुख-दु:ख की सामग्री प्रस्तुत करते हैं। **'विभूषन्** शब्द में एक अद्भुत स्वारस्य है, जो दूसरी किसी भाषा के एक शब्द द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। विभूषन् का अर्थ है विशेषरूप से सजाना और भूषारहित करना। पुण्यवानों को उनके पुण्य के अनुसार उत्तमगति मिलती है, वह सजाना है। पापियों को उनके पाप के अनुकूल दुर्गति मिलती है, वह भूषारहित करना है। परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, प्रत्युत-**'याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य: समाभ्य:'** (यजु: ० ४०।८) = अपनी सनातन प्रजाओं (जीवों) के लिए याथातथ्य रूप से पदार्थों को बनाता है। जैसा जिसने अपना अधिकार बनाया है, उनके अनुसार भला अधिकार है तो भला, बुरा है तो बुरा, फल मिलता है।

उत्तरार्ध में उत्तमकर्मा बनने का एक उपाय निर्दिष्ट हुआ है-**'यते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथ: शिवो भव'**- चूँकि हम तेरे ध्यान-चिन्तन और उत्तम ज्ञान को ग्रहण करते हैं, अत: तीनों में श्रेष्ठ तू हमारे लिए सुखकारी हो। यदि मनुष्य अपना कल्याण चाहे तो उसे भगवान् का ध्यान और उत्तम ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। भगवान् प्रकृति, जीव तथा ब्रह्म इन तीनों में श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ का ध्यान अवश्य ही श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ का ज्ञान भी श्रेष्ठ है। श्रेष्ठतम को वरण करना-अपनाना सर्वथा श्रेष्ठ कर्म है। श्रेष्ठतम कर्म का फल भी श्रेष्ठतम होना चाहिए। भगवान् के दिये कल्याण से बढ़कर और क्या श्रेष्ठ हो सकता है? अत: भगवान् से प्रार्थना है कि तू ही हमारे लिए शिव-कल्याणकारी बन। भगवान् सर्वत्र व्यापक है, अत: वह सबके कर्मों को जानता है, अत: उसे कर्मफल प्रदान करने में किसी बिचौलिया की अपेक्षा नहीं होती।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत: सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा: सहाग्निना।। यजु० २०.२५

भावार्थ-परमात्मा हम सबको वेद द्वारा उपदेश देते हैं कि, जिस देश या जन समाज में वेदवेत्ता सच्चे ब्राह्मण और शूरवीर क्षत्रिय मिलकर काम करते हैं, वह देश और जनसमुदाय पवित्र भाग्यशाली हैं। वही देश और जनसमुदाय परम सुखी है। उस देश के वासी विद्वान् लोग, अग्निहोत्रादि वैदिक कर्म करते और जगदीश्वर का ध्यान धरते और उस परमपिता परमात्मा के साथ रहते हैं। धन्यवाद है ऐसे देश को और उसके वासी परमेश्वर के प्यारे विद्वान् महापुरुषों को जो प्रभु के भक्त बनकर दूसरों को भी परमेश्वर का भक्त और वेदानुयायी बनाते हैं।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिवसङ्कल्पमस्तु।।

यजु० ३४.१

भावार्थ-हे सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर! आपकी कृपा से मेरा मन, शुभमंगलमय कल्याण का संकल्प करने वाला हो, कभी दुष्ट संकल्प करने वाला न हो, क्योंकि यह मन अति चंचल है, जागृत अवस्था में दूर-दूर तक भागता फिरता है। जब हम सो जाते हैं तब भी यह मन अन्दर भटकता रहता है, वही दिव्य मन दूर-दूर देशों में आने जाने वाला और ज्योतियों का ज्योति है। क्योंकि मन के बिना किसी ज्योति का ज्ञान हो सकता। दयामय परमात्मन्! यह मन आपकी कृपा से ही शुभ संकल्प वाला हो सकता है।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीरा:।
यदपूर्वं यक्षमन्त: प्रजानां तन्मे मन: शिवसङ्कल्पमस्तु।।

यजु० ३४.२

भावार्थ-हम सब जिज्ञासु पुरुषों को चाहिये कि, अपने मन को बुरे कर्मों से हटाकर परमेश्वर की उपासना, सुन्दर विचार, वेद विद्या, उत्तम महत्माओं के सत्सङ्ग में लगावें, क्योंकि जो उत्तम यज्ञादि कर्म करने वाले परम ज्ञानी अपने मन को वश में करने वाले और ध्याननिष्ठा धीर मेधावी पुरुष हैं, वे सब अधर्माचरण से अपने मन को हटाकर, श्रेष्ठ ज्ञान कर्म और योगाभ्यासादि में लगाते हैं। मेरा मन भी दयामय आप परमात्मा की कृपा से उत्तम सङ्कल्प और परमात्मा के ध्यान में संलग्न हो।

विवाह-संस्कार का महत्व

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

विवाह शब्द का अर्थ है-'वि' अर्थात् विशेष और 'वाह' अर्थात् यान। जीवन-यात्रा को पूर्णता प्रदान करने के लिए विवाह एक विशेष यान के समान है। गृहस्थ के दायित्वों को विशेष-रूप से वहन करना भी विवाह का भाव है। गृहाश्रम प्रवेश के लिए विधिवत् 'विवाह-संस्कार' कराना एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती थी मगर आज अधिकतर इसकी भी अवहेलना हो रही है। जिस प्रकार वर-वधु के चयन करने में असावधानी से काम लिया जाता है उसी प्रकार 'विवाह-संस्कार' भी मानों एक औपचारिकता मात्र ही बनकर रह गई है। लोग बाहरी ताम-झाम, खान-पानादि तथा फिल्में आदि बनाने में तो समय और दिन का खूब अपव्यय करते हैं मगर जब संस्कार का समय आता है तो पण्डित जी से कह दिया जाता है कि बस जल्दी से फेरे करवा दो... कुछ लोग तो किसी मन्दिर आदि में जाकर एक-दूसरे को हार पहनाकर ही पति-पत्नी बन जाते हैं। बहुत ये न्यायालय में जाकर विवाह करवा लेते हैं। इससे वर-वधू भले ही पति-पत्नी तो बन जाते हैं मगर विवाह-संस्कार के द्वारा गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए जो महत्वपूर्ण सूत्र दिए जाने अपेक्षित होते हैं उनसे ये सभी वंचित रह जाते हैं। 'विवाह-संस्कार' में वर-वधू से बहुत सी प्रक्रियाएं करवाई जाती हैं जिनका अपने-आप में बहुत महत्व है। प्रारंभ में ही वधू द्वारा वर का स्वागत किया जाता है। उसके बाद आसन देना, पैर व मुख धोने और आचमन के लिए जल देना तथा मधुपर्क द्वारा सत्कार करना-ये समस्त प्रक्रियाएं मानों भावी जीवन के कर्त्तव्यों की ओर संकेत करती हैं। इन प्रक्रियाओं में हमारी प्राचीन संस्कृति के दिग्दर्शन होते हैं। जीवन में इसी प्रकार से आदर-भाव बना रहना अपेक्षित है। उसके बाद वधू की ओर से वर को गोदान दिया जाता था। यह प्रक्रिया भी गौ-पालन की प्रेरणा देती है। वस्त्रों आदि का आदान-प्रदान भी आपसी पारिवारिक सामंजस्य और सौहार्द का प्रतीक है। यज्ञ-मण्डप में आते ही वर-वधु एक बहुत ही सुन्दर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हैं (ऋ०10-85-47) हे इस यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान् लोगों! आप हम दोनों को निश्चय करके जानें कि हम अपनी प्रसन्नता पूर्वक गृहाश्रम में एकत्र रहने के लिए एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं, कि हमारे दोनों के हृदय जल के समान शान्त और मिले हुए रहेंगे। जैसे प्राणवायु हमको प्रिय है वैसे हम दोनों एक-दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे। जैसे धारण करने हारा परमात्मा सब में मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है, वैसे हम दोनों एक-दूसरे को धारण करेंगे। उपदेश करने हारा श्रोताओं से प्रीति करता है वैसे हमारे दोनों की आत्मा एक-दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को धारण करे। पति-पत्नी के प्रेम की इससे अच्छी और कोई उपमा नहीं हो सकती है। किन्हीं भी दो मिली हुई वस्तुओं को किसी न किसी यन्त्र के द्वारा अलग-अलग किया जा सकता है। मगर दो स्थानों से लाकर जल मिला दिया जाए तो उसे कोई अलग नहीं कर सकता है। प्राणवायु जितना प्रेम करना एक अद्भुत उपमा है। मन्त्र का प्रत्येक शब्द पति-पत्नी को अनुपम सन्देश देता है। इस प्रकार से की गई प्रतिज्ञाओं को यदि जीवन में स्मरण रखा जाए तो पति-पत्नी में किसी प्रकार का मन-मुटाव हो ही नहीं सकता है। विवाह संस्कार में वर और वधू द्वारा पाणिग्रहण-प्रतिज्ञा-विधि में कहे गए मन्त्र भी बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित हैं।

इन छः मन्त्रों के भाव मनन करने योग्य हैं जो वर और वधू के द्वारा कहलवाए जाते हैं। वे एक-दूसरे से कहते हैं-'हे देवी! मैं ऐश्वर्य, सुसन्तान आदि सौभाग्य की वृद्धि के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू वृद्धावस्था तक मेरे साथ सुखपूर्वक रहा। संसार के उत्पादक और धारक परमात्मा ने और सभा-मण्डप में बैठे हुए विद्वान् लोगों ने तुम्हें गृहस्थाश्रम के लिए मुझे दिया है। हे प्रिये! ऐश्वर्ययुक्त तथा धर्ममार्ग में प्रेरक मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं धर्म से तेरा गृहपति हूँ। हे अनघे! सब जगत् के पालक परमात्मा ने जिस तुझको मुझे दिया है वह तू मेरी पालन-पोषण करने योग्य पत्नी है। तू मुझ पति के साथ उत्तम सन्तान वाली होकर सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन धारण कर। हे वरानने! प्रभु के रचे इस संसार में हम ज्ञानी जनों की भान्ति अपना जीवन व्यतीत करें। तू सुन्दर आभूषणों से अलंकृत होकर बादलों में चमकने वाली विद्युत् के समान मेरे चित्त को प्रसन्न किया कर। परमात्मा तुझे प्रजा से युक्त करे। मैं सूर्य की किरणों के समान वस्त्र और आभूषण आदि से तुझे सदा शोभित रखूंगा। हे उपस्थित विद्वानों और मान्य सम्बन्धियो! जैसे इन्द्र और अग्नि, द्युलोक और भूमि, वायु मित्र और वरूण, ऐश्वर्य, वैद्य और उपदेशक, बृहस्पति-मरूत्, ब्रह्म, सोम-ये सब इस स्त्री को प्रजा से बढ़ाया करते हैं, वैसे हम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम के अभ्युदय को बढ़ाया करें। हे कल्याणि! मैं कुल की वृद्धि को देखता हुआ तेरे रूप को प्राप्त होता हूँ, तू भी प्रेमपूर्वक मुझ में व्यापक होकर अनुकूल व्यवहार को प्राप्त हो। मैं मन से भी तेरे साथ चोरी को छोड़ता हूँ और किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से भोग नहीं करूंगा। पुरूषार्थ से शिथिल होकर भी गृहस्थ की सब विघ्न-बाधाओं को दूर करता रहूंगा। ये प्रतिज्ञा-मन्त्र मानों सुखी जीवन का आधार हैं।

शिला-आरोहण, लाजाहोम तथा प्रदक्षिणा करती बार जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है उनके भी बहुत ही उत्तम एवं सारगर्भित भाव हैं। शिलारोहण के द्वारा संकेत दिया जाता है कि गृहस्थाश्रम के सुख-दुःख, हानि-लाभ आदि द्वन्द्वों को दृढ़तापूर्वक सहन करना है। लाजाहोम एवं प्रदक्षिणा में कहे गए मन्त्रों द्वारा भी सुख-समृद्धि की कामना की गई है। केश-मोचन प्रक्रिया करके वर द्वारा वधु को श्रृंगार करने का अधिकार दिया जाता है। सप्तपदी में जो प्रतिज्ञाएं की जाती हैं वे तो बहुत ही व्यवहारिक एवं अद्भुत हैं। वहां पर एक-एक पग बढ़ाते हुए शारीरिक बल, धन-धान्य, सुख-प्राप्ति, सन्तान-प्राप्ति, ऋतुओं की अनुकूलता की प्रार्थना की जाती है तथा अन्तिम पग में कहा जाता है कि हम सखा-भाव से जीवन की गाड़ी को एक-दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ाऐंगे। मस्तिष्क पर जल के छींटे देने का भाव है कि दोनों एक-दूसरे से शान्तियुक्त व्यवहार करेंगे। सूर्यावलोकन का भाव है कि हम सूर्य के दिव्य गुणों को अपने जीवन में धारण करेंगे और हृदय-स्पर्श के द्वारा कहा जाता है (पार०1-8-8) हे वधू! मैं तेरे अन्तःकरण और आत्मा को अपने हृदय में धारण करता हूँ। तुम्हारा चित्त सदा मेरे चित्त के अनुकूल रहे। मेरी वाणी को तुम एकाग्रचित्त से सेवन किया करो। प्रजापति परमात्मा तुम्हें मेरे लिए नियुक्त करे।

'विवाह-संस्कार' में जो उत्तर-विधि कराई जाती है वह भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रधान होम के बाद 'ध्रुव-दर्शन' और 'अरून्धती' दर्शन कराए जाते हैं। ध्रुव-दर्शन करके वधू कहती है-(गोभि० 2-3-9) हे ध्रुव नक्षत्र! जैसे तू ध्रुव है ऐसे ही प्रभु कृपा से मैं भी पतिकुल में ध्रुव होकर रहूँ। अरून्धती का अवलोकन करते हुए वधु कहती है-अरून्धात्यसि रूद्धाऽहमस्मि। हे अरून्धती तारे! जैसे तू सप्तऋषि-मण्डल के निकट सदा रूका रहता है वैसे मैं भी अपने पति के नियमों में रूद्ध हो गई हूँ... बन्ध गई हूँ...। वेद में (अथर्व०14-1-31, 12-3-39) पति-पत्नी के आपसी व्यवहार के सम्बन्ध में उपदेश दिया गया है-हे वर और वधू! तुम दोनों व्यवहारों में सत्य बोलते हुए समृद्ध ऐश्वर्य को इकट्ठे होकर एकत्रित करो। हे वेदरक्षक प्रभु! पति को इस पत्नी के लिए रूचिकर करो, यह पति भी इस पत्नी के प्रति मनोहर रीति से वाणी बोले। हे पति! पत्नी जो-जो तुझसे अलग-अलग होकर अर्थात् छिपकर पकाती है या हे पत्नी! पति तुझसे छिप-छिप कर पकाता है, एक गृहस्थ-लोक को मिलकर सम्पादित करते हुए तुम दोनों उस-उस कर्म को इकट्ठा मिला दो, तुम दोनों का वह-वह कर्म मिलकर हो।

पति-पत्नी में आपसी विश्वास बहुत महत्व रखता है इसलिए वे जो कुछ भी करें उसका एक-दूसरे को पता होना अपेक्षित है क्योंकि गृहस्थ रूपी गाड़ी को चलाने के लिए यह नितान्त आवश्यक है। इस आश्रम की सफलता के लिए दोनों का ही अपना-अपना विशेष स्थान व महत्व है। मनु महाराज कहते हैं (मनु०3-60,9-101, 102) जिस परिवार में पत्नी से पति सन्तुष्ट रहता है और वैसे ही पति से पत्नी सन्तुष्ट रहती है उस परिवार में निश्चय ही कल्याण का वास होता है। पति और पत्नी मरणपर्यन्त एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान् रहते हुए व्यभिचार से सर्वथा दूर रहें, यही स्त्री और पुरूष का संक्षेप में परम-धर्म समझना चाहिए। पति-पत्नी सदा ऐसा प्रयत्न करें कि कभी पृथक्-पृथक् स्थानों पर रहना पड़े तो भी व्यभिचार रूपी पाप न करें। पति के महत्व के सम्बन्ध में कहा गया है (वा० रामा०39-29,30,24) जैसे विना तारों के वीणा बजाई नहीं जा सकती और बिना पहियों का रथ नहीं होता वैसे ही स्त्री भी बिना पति के सुख नहीं पाती चाहे वह सौ पुत्रों वाली भी क्यों न हो। स्त्री के लिए उसका पिता सीमित मात्र में ही देता है। असीमित मात्रा में देने वाले पति की कौन स्त्री पूजा नहीं करेगी? सदाचार, सत्य, ज्ञान और मर्यादा में स्थिर रहने वाली साधु-स्वभाव की स्त्रियों के लिए एक पति ही पवित्र और परम विशिष्ट है। श्रीराम जी को सम्बोन्धित करते हुए सीता जी कहती हैं (अयो० सर्ग) स्त्री के लिए पिता, पुत्र, भाई-बन्धु, माता, सखी-सहेलियों में कोई भी उसके काम नहीं आता। स्त्री के लिए तो इस लोक में तथा परलोक में पति ही सब-कुछ है। यदि आप आज ही वन को जा रहे हैं तो मैं आपके आगे कुश और कांटों को हटा

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

वैदिक वर्ण व्यवस्था ही राष्ट्र की उन्नति का आधार

राष्ट्र की उन्नति के लिए सामाजिक व्यवस्था का होना आवश्यक है। बिना व्यवस्था के कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। वर्तमान राष्ट्र की व्यवस्था का आधार भीमराव अम्बेडकर कृत संविधान है, जिसके द्वारा समाज को व्यवस्थित करने का प्रयास किया जाता है। इस व्यवस्था के कारण आज हमारा समाज कई भागों में बंट गया है। इसके कारण समाज को अनेक जातियों में बांट दिया गया है। सत्ता के लिए इन लोगों को वोट बैंक के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इन सब अव्यवस्थाओं से राष्ट्र में अराजकता का माहौल तैयार किया जाता है जिसके कारण प्रतिदिन कोई न कोई दंगा फसाद होता रहता है। राष्ट्र की उन्नति के लिए किसी ऐसी व्यवस्था का होना अनिवार्य है जो सभी को मान्य हो और जिससे समाज में समरसता हो। ऐसी व्यवस्था हमें वेदों के द्वारा ही प्राप्त होती है जिसमें जन्म के आधार पर नहीं अपितु कर्म के आधार पर वर्णों का निर्धारण किया गया है।

वेदों के अनुसार समाज और राष्ट्र को सुसंगत और सुव्यवस्थित करने के लिए मनुष्यों को गुण, कर्म, स्वभाव भेद से चार प्रकार के कार्यों , जिन्हें वर्ण कहा गया है, उन चारों में से किसी एक को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। ये चार प्रकार के वर्ण हैं-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये चार वर्ण जन्म से नहीं, किन्तु कर्म की प्रधानता के लिए माने गए हैं। कर्म की व्यवस्था मनुष्य की योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार निर्धारित की गई है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता है कि किस वर्ण को पसन्द करता है और उसको क्या वह अच्छी प्रकार से निर्वाह कर सकेगा? परन्तु खेद है कि मध्य काल में जब से यह जन्ममूलक वर्ण-व्यवस्था आरम्भ हुई है, तब से समाज में अनेक विकृत्तियाँ, जैसे पारस्परिक भेद-भाव, ऊँच-नीच का भाव, छुआ-छूत का भेद, घृणा, विद्वेष, संघर्ष आदि ने जन्म लिया और एक आर्य जाति में फूट प्रारम्भ हो गई। परिणामस्वरूप उससे टूटकर अनेक तथाकथित जन्ममूलक वर्ण के लोग विधर्मी हो गए और इस्लाम या ईसाई मत ग्रहण कर मुसलमान या ईसाई बन गए। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारा विशाल देश भारत हजारों वर्षों तक विदेशियों के शासन कुचक्र में दासता का जीवन जीने के लिए मजबूर हो गया। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारतवर्ष विनाश और पतन के कगार पर खड़ा होकर अनेक टुकडों में बंट गया। जिस देश की गौरव गाथा चारों दिशाओं में गुंजायमान थी, वही विदेशियों का गुलाम हो गया। इन अत्याचारों के परिणामस्वरूप ईश्वरकृपा से देश में नवजागरण काल का उदय हुआ और उसमें अगणित बलिदानियों के त्याग से भौगोलिक दृष्टि से खण्डित भारत स्वतन्त्र हुआ परन्तु अब भी जन्ममूलक इस वर्ण-व्यवस्था का विघटनकारी रोग समाप्त नहीं हुआ है। यद्यपि अनेक महापुरूषों ने इस रोग को दूर करने का प्रयास किया तथापि यह समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। इसका निराकरण तो तभी सम्भव है, जबकि व्यक्ति की रूचि, गुण, कर्म की योग्यता और श्रेष्ठ धार्मिक विद्वानों एवं गुरूकुलों के आचार्यों की सहमति तथा संस्तुति के आधार पर वर्ण का निर्धारण हो। **नान्यः पन्था विद्यते अयनाय** यही वैदिक व्यवस्था है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था विज्ञानयुक्त, स्वाभाविक और पारस्परिक भेदभाव से रहित है, जैसा कि वेद में कहा गया है-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।

यह मन्त्र ऋग्वेद और यजुर्वेद के पुरूष सूक्त का मन्त्र है। इसमें समाज के चार प्रमुख अंगों की मनुष्य शरीर के अंगों से उपमा दी गई है। जैसे मनुष्य शरीर में सब से उच्च और प्रधान अंग मुख अर्थात् शिर या मस्तिष्क ज्ञान का भण्ड़ार है, उसी प्रकार समाज में सिर के समान ज्ञान प्रधान मनुष्य या मनुष्य समुदाय ब्राह्मण नाम के वर्ण से सम्बोधित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार शरीर में दोनों भुजाएं जैसे बल प्रधान होने पर रक्षा करने योग्य की रक्षा करने और दण्डित करने योग्य को दण्डित करने में समर्थ मानी जाती हैं, उसी प्रकार समाज में सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए और शासन के विधि-नियमों के अनुसार सेना, पुलिस और पक्षपात रहित न्याय के द्वारा प्रशासन करने वाला द्वितीय वर्ण क्षत्रिय नाम से सम्बोधित किए जाने योग्य है। तीसरा शरीर का मध्य भाग जैसे उदर, खाए हुए अन्न को रस, रक्त, मांस, अस्थि इत्यादि सात प्रकार के धातुओं में विभक्त करने का कार्य करता है, उसी प्रकार समाज का तीसरा अंग वाणिज्य-व्यापार प्रधान होने से वैश्य कहा जाता है। वैश्य के कर्त्तव्य कर्मों में कृषि तथा गाय, घोड़ा, बकरी, भेड़ आदि पशुओं का पालन भी समाविष्ट है। शरीर का चतुर्थ अंग पैर है, जो शरीर के तीनों अंगों-शिर, भुजाऐं और उदर-कमर जंघा आदि को थामे रहता है, तथा चलने का कार्य करता है। उसी प्रकार समाज में जो लोग न ज्ञान और विशेष बुद्धि का कार्य कर सकते है, न बल सम्बन्धी कार्य कर सकते हैं और न वाणिज्य व्यापार अथवा कृषि गोपालन का कार्य ही कर सकते हैं। वे उक्त तीनों वर्णों की सेवा और शारीरिक परिश्रम का कार्य करने के कारण शूद्र वर्ण के नाम से सम्बोधित किए गए हैं। इन चारों वर्णों के गुण, कर्मों का विस्तृत विधान वेदादि साहित्य से लेकर मनुस्मृति, धर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों, भगवद्गीता आदि में देखा जा सकता है।

ये चारों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण हैं, जाति नहीं। वर्ण का अर्थ है वरण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य। कार्यविशेष को करने की प्रबल इच्छा और उसके लिए योग्यता का होना वर्ण अपनाने का हेतु माना गया है। जैसे शरीर के चारों अंग आपस में मिलजुल कर एक होकर कार्य करते हैं, और पूरे शरीर को सुख पहुँचाते हैं, उसी प्रकार समाज के ये चारों वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आपस में मिलजुल कर सम्पूर्ण समाज में एकता बनाए रखते हुए समाज को सुखी और प्रसन्न करते हैं। मनुष्य रूप में एक समान होने और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के परस्पर के कार्यों में कुछ-कुछ भेद होने पर भी परस्पर संघर्ष नहीं होना चाहिए। यह वर्णव्यस्था वैदिक पद्धति पर आधारित होने के कारण शुद्ध है। शूद्र वर्ण का व्यक्ति अगर अपने अन्दर योग्यता पैदा कर लेता है तो वह अपना वर्ण परिवर्तन करके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कहलाने का अधिकारी हो जाता है। इसलिए यह वर्ण व्यवस्था जन्मना नहीं कर्मणा आधारित है। यदि ब्राह्मण वर्ण के व्यक्ति का बालक अपने अन्दर विद्या के द्वारा योग्यता को प्राप्त नहीं करता है तो वह भी शूद्र कहला सकता है। इसी प्रकार वैदिक वर्ण व्यवस्था में जिस -जिस वर्ण की योग्यता व्यक्ति के अन्दर होती है वह उसी वर्ण के अनुसार कहलाने का अधिकारी है। कोई भी वर्ण अपने कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बन सकता है। इन तीनों कर्मों से हीन व्यक्ति शूद्र है।

जब तक समाज में कर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था का प्रचलन था तब तक समाज इस जातिवाद के जहर से कोसों दूर था। भारतवर्ष के पतन का कारण अनेक जातियों में विभक्त हो जाना था। वर्तमान में भी अगर राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाना है तो इस जातिवाद को खत्म करना होगा। राजनीतिक दल चुनावों में वोट प्राप्त करने के लिए जाति के आधार पर लोगों को बांटने का कार्य करते हैं जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर अग्रसर हो जाता है। इसीलिए आज आवश्यकता है कि वेद आधारित वर्ण-व्यवस्था के अनुसार समाज को उन्नत एवं खुशहाल बनाएं और इस जातिवाद के भंयकर जहर से राष्ट्र को बचाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

(४) गूलर की पत्तियाँ ठन्डे जल में पीसकर पिलायें दस्त बन्द होंगे।

(५) काला नमक, काली मिर्च, नौसादर आम के फल सब पीस कर मटर के बराबर गोली बना लें। गर्म जल के साथ सेवन करें।

(६) रात्रि को मिट्टी के पात्र तथा तांबे के पात्र में जल भर सुबह सूर्योदय से पहले पियें। वात, पित, कफ के सभी रोग दूर होते हैं।

अश्मरी-(१) सेब का प्रयोग करें।

(२) मूली का रस २० ग्राम यवक्षार १. ग्राम दोनों को मिलाकर पिलायें।

(३) फिटकरी सफेद, लोहा सज्जी, कलमी शोरा १०, १० ग्राम नौसादर ५० ग्राम बारीक पींस कर प्रतिदिन ३ ग्राम प्रात: सायं पानी से सेवन करें।

अकौता रोग-महुवे के पत्ते सरसों के तेल में भिगोकर गर्म-गर्म बाँधें। २ घन्टे बाद पत्ते बदलते रहें।

अँगुली का फोड़ा (विसारा)-हंसराज बूटी को पीसकर शुद्ध घी में पकाकर सुहाता-सुहाता फोड़े पर बाधें। पहले दिन ही दर्द कम हो जायेगा। १ सप्ताह में फोड़ा ठीक हो जायेगा। ऐसी चमत्कारिक औषधि है।

उबकाई-१. नीबू पर नमक और काली मिर्च लगाकर थोड़ा गर्म करके चूसें। कै, उल्टी, उबकाई ठीक हो जाती है।

(२) काली हरड़ का चूर्ण १ ग्राम को शहद में मिलाकर चाटें।

एग्जिमा-(१) कटहल के नर्म पत्तों को पीसकर एग्जिमा पर लगायें। १ सप्ताह में लाभ होगा।

(२) अफीम, संखिया, हरताल तबकिया ३ ग्राम वाचची, कवेला, मुदासन, चिरोंजी, मेन्सल गन्धक ५ ग्राम १०० ग्राम कोलतार मिलाकर लेप कर लें अनुभूत है। लकड़ी की फुरेरी से लगायें।

(३) कनेर की जड़ की छाल ५० ग्राम तिल्ली का तेल २०० ग्राम लेकर गर्म करें छाल काली होने पर उतार लें। इस तेल से एग्जिमा वाली जगह को फुरैली से लगायें।

(४) सत्यानाशी कटेरी की जड़ पीसकर पानी में लगायें।

एड़ी की पीड़ा-१ आक के फूल कपड़े में लपेट कर पानी से भिगोकर भत्ता बनायें। जब गर्म हो जावे तब सुहाता रात्रि को बाधें। १ सप्ताह प्रयोग करो।

ऐंठन-प्याज का रस गर्म करके तलवों में मालिश करें स्त्री रोग है।

इकतरा-देशी आक के फूल पीसकर गुड़ में लपेट कर खिलायें मटर के बराबर गोली बना लें। १ गोली पानी के साथ निगल जायें दिन में तीन बार प्रयोग करें। दूसरे दिन बुखार नहीं आयेगा।

कमर पीड़ा-तारपीन के तेल की मालिश करके धूप में बैठें।

कांच निकलना-हुलहुल के फूलों का रस निकाल कर रोगिणी के हाथों को तर कर दें। फिर वह इन हाथों को गुदा पर बार-बार रखें।

नोट-१. यह औषधि केवल स्त्रियों के लिए लाभप्रद है पुरुषों को नहीं। यह औषधि का चमत्कार है।

२. पुराने जूतों का मचड़ा जलाकर तेल से हाथ चुपड़ कर गुदा से लगायें।

३. सुखे हुए लिहसोड़े के पत्ते जलाकर उनकी राख तेल में चुपड़ कर गुदा से लगायें।

कान के रोग (कान के कीड़े)-१. तारपीन का तेल २, ३ बूंद कान में डालें।

२. गौ मूत्र १० ग्राम, २ ग्राम वर्किय हर ताल पीसकर मिला लें। कानों में इसकी ३,४ बूँद डालें।

कान पीड़ा-१. नारायण तेल गर्म करके कानों में डालने से कर्ण पीड़ा दूर होती है।

२. तुलसी रस गर्म करके कान में डालें।

३. प्याज का रस गर्म करके डालें।

कान बहना-१. नीबू का रस जरा सा सज्जी खार मिलाकर कानों में डालें।

२. रत्न जोत १० ग्राम, १०० ग्राम सरसों के तेल में पकायें। जब पत्ते काले पड़ जायें तब तेल उतार कर शीशी में रख लें। ३ बूँद सुबह शाम डालें। १ सप्ताह में रोग दूर होगा।

कम सुनना-१. गेंदे के पत्तों का रस २. बूँद कान में डालें।

२. सुदर्शन के पत्तों का रस गर्म करके कान में डालें।

३. सरसों के तेल में लोंग जलाकर शीशी में रख लें। २ बूँद कान में डालें।

४. बिल्वादि तेल कान में डालें। बहरापन दूर होगा।

५. प्याज का रस गर्म करके कान में डालें दिन में तीन बार।

कर्णश्राव-क्षार तेल ड्रापर से २ बूँद डालें।

कुकर खांसी (कुत्ता खांसी)-१ लोंग भूनकर शहद के साथ चटायें।

कटे पर-१. चाकू आदि से कटे स्थान पर सदाहरी (लक्ष्मण बूटी) घाव पर्णों आदि नाम वाली औषधि के पत्तों का रस निचोड़ दें। रक्त बन्द होकर घाव ठीक हो जायेगा परीक्षत हैं।

२. मिट्टी के तेल में कपड़ा भिगोकर कस कर बांध दें।

काली खांसी-१. पीपल के पत्तों की भस्म ५ ग्राम केले के पत्तों की भस्म ५ ग्राम अपामार्ग (चिरचिटा) के पत्तों की भस्म ५ ग्राम सबको मिला घोंट कर शीशी में रखें। १ ग्राम दवा शहद में मिला कर चटायें (अनुभूत हैं)।

२. केले की भस्म शहद में मिलाकर चटायें अति लाभप्रद है।

कुत्ते का काटना-देशी साबुन और शहद दोनों समभाग मिला कर मरहम बना लें। इसे कुत्ते के काटे घाव पर लगायें।

कुष्ठ कोढ-(सफेद दाग)-१. आधा लीटर चोव चीनी एक लीटर दूध में रात को भिगो दें। दूध सोख जाय तो और मिलायें आग पर पकायें। जब हाथ से छूने पर टूटने लगे तब उतार कर चाकू से छोटे-छोटे टुकड़े कर ले। धूप में सुखाकर चूर्ण बनाकर सुबह शाम शहद से चाटे। मात्रा ५ ग्राम शहद ३ ग्राम चूर्ण।

२ पंचार के पत्ते रोटी में भरकर बेसन में मिलाकर बनाये और खाये। १ माह में दाग काले पड़ जायेगे।

कुष्ठ-वावची का बारीक चूर्ण पीस छान कर गोमूत्र में मिला कर लेप करें। कुछ दिन में ही दाग काले पड़ने लग जायेगे। जब तक पूर्ण लाभ न हो लेप बन्द न करे।

कंठ माला-१. लिसोड़े के पत्ते भूभल में गर्म करके बाधें।

२. छोटी हरड़ (काली हरड़) ३० ग्रम चित्रा की छाल ३० ग्राम काली मिर्च २० ग्राम, मीठा तेलिया शुद्ध १० ग्राम। सबको बारीक पीस कर चूर्ण बनाकर गाय के घी में मिला मलहम जैसा बना लें इसमें चौगुना शहद मिलालें। यह अवलेह बन जायेगा। प्रतिदिन २ ग्राम गुन-गुने जल से सेवन करें। हर प्रकार के कोढ के लिए उत्तम औषधि है।

३. शरीर पर नीम का मद मलने से हर प्रकार का कोढ़ दूर हो जता है।

४. झोझक को पीसकर पानी में उबाल कर काढ़ा करे। इसके पीने से हर प्रकार का कोढ दूर हो जाता है।

५. निर्गुन्ड्री (सम्हालू) की जड़ का चूर्ण ५ ग्राम तेल में मिलाकर सेवन करें।

कूलिंज (आतों की पीड़ा)-रीठे का छिलका उतार कर बारीक पीस कर चूर्ण कर लें समभाग गुड़ मिलालें। पानी के साथ खाये थोड़ी देर में ही लाभ होगा।

कै (उल्टी)-१. अमृत धारा प्रयोग करें।

२. बड की दाढ़ी की भस्म ठन्डे जल से ले उल्टी रुक जायेगी।

विधि-सत अजवायन २५ ग्राम, इलायची का तेल १० ग्राम कपूर २५ ग्राम, दाल चीनी का तेल १० ग्राम। सबको शीशी में डाल कर १० मिनट हिलायें दवा तैयार है। यह खांसी बदहजमी, पेट दर्द, दस्त, हैजा, दाँत दर्द, बिच्छू देश आदि रोगों की रामवाण औषधि है।

कैंसर-नीबू का रस रोगी जितना चुस सके चुसाएँ। इससे दर्द और वर्म ठीक होता है।

काँटा निकालना-१. धतूरे के पत्ते गुड़ में लपेट कर पीसकर बाँध दे काँटा बाहर आ जायेगा।

२. एक मास तक गाजर का रस पिलाए।

कॉडी का दर्द-असली हींग २ ग्राम को चीज निकाल कर मुनक्का में लपेट कर? घूँट गर्म पानी के साथ पिलायें। दवा देते ही कॉडी दोनों पसलियों के बीच की जगह का दर्द दूर हो जाता है। (शक्ति वर्धक है।)

काया कल्प-सफेद सांठ की जड़ मिश्री मिलाकर दूध के साथ लें।

खसरा-करेले के पत्तों का रस २ ग्राम हल्दी पिसी हुई २ ग्राम मिलाकर पिलाने से खसरा ठीक हो जाता है।

खाँसी-१. वांसा के पत्ते २५ ग्राम अदरक १० ग्राम कटेरी की जड़ (पसर कटेरी) १० ग्राम, ५ पान के पत्ते कूट पीस कर काढ़ा बनाये। चौथाई पानी यानी? किलो का २५० ग्राम रह जाय शुद्ध शहद पिला कर शीशी में रख लें। ५ ग्राम सुबह शाम चाटे। २० साल पुरानी खांसी दूर हो जायेगी।

२. बहेड़े का वक्कल मुँह में रख कर चूसे।

३. दिन में ३, ४ बार गुदा से सरसों का तेल चुपड़े।

(क्रमश:)

मुक्ति के मार्ग बताती श्रीमद् भगवद्गीता

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है सब दु:खों से छूटकर मुक्ति को प्राप्त करना। परन्तु मुक्ति प्राप्त करना कोई सरल कार्य नहीं है। सांख्य दर्शनकार महर्षि कपिल का कथन हैं त्रिविध दु:खात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरूषार्थ। तीन प्रकार के दु:खों आध्यात्मिक, अधिभौतिक और आधिदैविक, की अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त पुरूषार्थ से ही संभव है।

वैशेषिक दर्शनकार कणाद का कहना है कि 'यतोऽभ्युदयनि: श्रेयस सिद्धि स: धर्म:।' अर्थात् धर्म वह है जिसके धारण करने से इस संसार में सभी प्रकार की उन्नति के साथ ही मोक्ष भी प्राप्त हो जाती है। मीमांसाकार महर्षि जैमिनी का कहना है कि 'चोदना लक्षणोऽर्थो धर्म:।' अर्थात् ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए जिनकर्मों के करने की आज्ञा दी है वहीं धर्म है।

वास्तव में धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए विवेक की महती आवश्यकता होती है। विवेक द्वारा धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानकर उसे आचरण में ढालना होता है। कहा गया है कि आचरवान पुरूषो वेद:।' विद्वान् वही कहा जायगा जो अपने प्राप्त ज्ञान को आचरण में ढाल लेता है।

वेद में ज्ञान और कर्म के विषय में कहा गया है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदो भय सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। यजु. 40.14

जो व्यक्ति विद्यां (ज्ञान) तथा अविद्या (कर्म) को एक साथ सम्पन्न योग्य जानता है वह अविद्या (कर्म) के द्वारा मृत्यु को जीत लेता है अर्थात् आवागमन के चक्र को लांघ जाता है और विद्या ज्ञान के द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

इसी धारणा को ध्यान में रखकर यजुर्वेद अध्याय 26 मंत्र के 2 के द्वारा मनुष्य मात्र को वेदाध्ययन करने का आदेश दिया है।

यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:।

ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।

यह मेरी वाणी मनुष्य मात्र का कल्याण करने वाली है। मैं इसका उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्त्री, सेवक आदि सभी के लिए करता हूँ।

इसी प्रकार श्रीमद् भगवद्गीता में कहा गया है कि-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योग संसिद्ध: कालेनात्मनि विन्दति।। गीता 4.38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि: सन्देह कुछ भी नहीं है उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा अपने आप ही आत्मा में पा लेता है।

फिर कर्म की महत्ता बताते हुए यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 2 में कहा गया है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।

एवं त्वयि नान्यथे तोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

मनुष्य इस संसार में धर्मयुक्त-वेदोक्त निष्काम कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करे। इस प्रकार धर्मयुक्त कर्म में प्रवर्तमान तुझ व्यवहारों को चलाने वाले जीवन के इच्छुक होते हुए को अधर्मयुक्त अवैदिक काम्य कर्म नहीं लिप्त होता। इसके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 9 के सूक्त 24 में कर्म योगी के विषय में कहा गया है-

अभिगावो अधन्विषरापो न प्रवतायती:।

पुमाना इन्द्रमाशत:।। ऋ. 9.24.2

कर्मयोगी पुरूषों की इन्द्रियां परमात्मा का साक्षात् करती हैं अर्थात् परमात्मा को अपना विषय बनाती है। वशीभूत हुई इन्द्रियां मनुष्य को पवित्र करती हैं।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 64 मन्त्र 23 में कहा गया है कि जो लोग कर्मयोगी हैं तथा योगाभ्यास द्वारा परमात्मा को अपने ध्यान का विषय बनाते हैं वे परमात्मा के साक्षात्कार को प्राप्त होते हैं।

ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 5 की कई ऋचाओं में ज्ञान योगी और कर्मयोगी के विषय में वर्णन हुआ है।

इसी प्रकार श्रीमद् भगवद् गीता में कर्मयोगी के विषय में वर्णन है-

युक्त: कर्मफलं त्वक्त्वा-शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।

अयुक्त काम कारेण फले सक्तो निबध्यते।। गीता 5.12

कर्मयोगी कर्म का फल त्याग करके भगवात्प्राप्ति रूप शान्ति को प्राप्त होता है। सकाम पुरूष कामना की प्रेरणा से फल में आसक्त होकर बंधता है।

फिर ज्ञान योगी के विषय में कहा गया है-

न बुद्धि भेदं जनयेदज्ञानां कर्म सङ्गिनाम।

जोषयेत्सर्व कर्माणि विद्वान्युक्त: समाचरन्।। गीता 3.26

परमात्मा के स्वरूप में अटल स्थित हुए ज्ञानी पुरूष को चाहिए कि वह शास्त्र विहित कर्मों में आसक्ति वाले अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम अर्थात् कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न न करे। किन्तु सदैव शास्त्र विहित समस्त कर्मभलिभांति करता हुआ उनसे भी वैसे ही करवाये।

अब तक हमने कर्म और ज्ञान के विषय में चर्चा की है। अब हम उपासना विषय पर चिन्तन करते हैं क्योंकि मुक्ति पाने के लिए ज्ञान, कर्म और उपासना का समुच्चय आवश्यक है।

श्रीमद् भगवद् गीता ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानती है।

प्रकृतिं पुरूषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति सम्भवान्।। गीता 13.19

प्रकृति और पुरूष इन दोनों को ही तू अनादि जान और राग-द्वेषादि विकारों को तथा त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थों को भी प्रकृति से ही उत्पन्न जान।

कार्य करण कर्त्तत्वे हेतु: प्रकृति प्रकृतिरूच्यते।

पुरूष: सुख दु:खानां भोक्तृत्वे हेतुरूच्यते।। गीता. 13.20

कार्य और कारण को उत्पन्न करने में हेतु प्रकृति कही जाती है। जीवात्मा सुख-दु:खों के भोक्तापन में अर्थात् भोगने में हेतु कहा जाता है।

कविं पुराणमनुशासितार मणोरणीयांसमनुस्मरेद्य:।

सर्वस्य धातारमचिन्त्य रूपमा-दित्य वर्णं तमस: परस्तात्।। गीता 8.9

जो पुरूष सर्वज्ञ, अनादि सबके नियन्ता सूक्ष्मतिसूक्ष्म सबके धारण-पोषण करने वाले, अचिन्त्यास्वरूप सूर्य के समान नित्य चेतन प्रकाश रूप और अविद्या से परे सच्चिदानन्द घन परमेश्वर का स्मरण करता है-

प्रयाणकाले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो योग बलेन चैव।

भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरूषमुपैति दिव्यम्।। गीता 8.10

वह भक्ति युक्त पुरूष अन्त काल में भी योग बल से भृकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी प्रकार स्थापित करके फिर निश्चिंत मन से स्मरण करता हुआ उस दिव्य स्वरूप परम पुरूष परमात्मा को ही प्राप्त होता है-

यद्क्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतये वीतरागा:।

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये।। गीता 8.11

वेद के जानने वाले विद्वान जिस सच्चिदानन्द घनरूप परम पद को अविनाशी कहते हैं। आसक्ति रहित यत्नशील सन्यासी महात्माजन जिसमें प्रवेश करते हैं और जिस परम पद को चाहने वाले ब्रह्मचारी लोग ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं।

इस प्रकार हमने ज्ञान, कर्म और उपासना के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के विषय में श्रीमद् भगवद् गीता के आधार पर विचार कर लिया है।

मुक्ति प्राप्त करने का एक दूसरा साधन विवेक, वैराग्य, षट्क सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व भी है। श्रीमद् भगवद् गीता में इस पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। अब हम इस साधन पर भी गीता के आधार पर चिन्तन करते हैं।

विवेक यथार्थता का बोध है। नित्य को नित्य, अनित्य को अनित्य, जड़ को जड़ और चेतन को चेतन मानना अर्थात् जो जैसा है उसको वैसा ही मानना विवेक कहा जाता है।

विवेक के दो भाग है-एक अपरा और दूसरा परा। अपरा वह है जिससे पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों को जानकर उनसे ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना, दूसरी परा विद्या वह है जिससे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होना। यह परा विद्या अपरा विद्या का ही उन्नत रूप है। **(क्रमश:)**

पृष्ठ 2 का शेष-विवाह-संस्कार का महत्व

मार्ग साफ करती हुई पैदल ही चलूंगी। हे वीर! मैं नित्य नियमपूर्वक, काम-भोगों को छोड़कर ब्रह्मचारिणी रहती हुई आपके साथ मधुर गन्धयुक्त वनों में विचरूंगी। मैं वन में उत्पन्न फल-मूलों से ही नित्य अपना निर्वाह कर आपके साथ वन में रहूंगी, आपको कोई कष्ट नहीं दूंगी। हे राघव! यदि तुम्हारे बिना मुझे स्वर्ग में भी रहना पड़े तो मुझे वह भी पसन्द नहीं। अन्यत्र कहा गया है (वा० रा० 27-4,5) हे पुरूषों में श्रेष्ठ पतिदेव! पिता, माता, भाई, पुत्र और पुत्रवधू ये सब अपने-अपने पुण्यकर्मों के अनुसार अपने-अपने भाग्यरूप फल को पाते हैं, किन्तु एकमात्र पत्नी ही अपने पति के भाग्यरूप फल को पाती है। वेद में पति को आदेश दिया गया है-**चारू संभलो वदत वाचमेताम्।** (अथर्व०14-1-31) अर्थात् पति को चाहिए कि वह पत्नी के साथ सुभाषी होकर दिव्य-वाणी का ही प्रयोग किया करे। पति अपने कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में स्वयं कहता है (अथर्व०14-1-48,52,57,63) हे पत्नी! मैं तेरा प्राणिग्रहण करता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ कि तू प्रजा और धन की दृष्टि से मुझ द्वारा व्यथा को प्राप्त न होगी। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं इस पत्नी का सदा पालन-पोषण करूंगा। मैं पति अपने चित्त में इस पत्नी का रूप सदा अंकित रखुंगा और इसे अपने मन का आश्रय जानता हुआ व्यवहार करूंगा। मैं इससे चोरी से कुछ भी खाऊँ-पीऊँगा नहीं, चोरी से खाने-पीने का विचार तक छोड़ देता हूँ। इस प्रकार मैं परमात्मा के प्रेमपाशों को स्वयं दृढ़ करता हूँ। पति अपने माता-पिता से प्रार्थना करता है कि हे मेरे गृह-जीवन के स्तंभो! देवाधिदेव प्रभु ने गृहस्थ जीवन का जो मार्ग निर्दिष्ट किया है, उस मार्ग पर चलती हुई वधु को कटुभाषणादि द्वारा कष्ट नहीं पहुंचाऊंगा। इस दिव्यशाला के द्वार को हम मिलकर, वधू के आने के लिए सुखदाई बनाते रहें। जिस प्रकार पति का पत्नी के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है उसी प्रकार पत्नी का भी गरिमामय स्थान है।

घर, स्वयं में घर नहीं कहलाता अपितु पत्नी ही असली घर कहलाता है। महाभारत में कहा गया है (महा०आ०74-41 से 44) अर्थात् पत्नी मनुष्य का अर्ध भाग (अर्धांगिनि) है, पत्नी ही सर्वोत्तम मित्र है। पत्नी धर्म, अर्थ और काम का आधार है तथा भवसागर से पार जाने वाले के लिए सहारा है। पत्नी वाले लोग ही सत्कर्मों के करने में सफल होते हैं। पत्नी वाले ही सच्चे गृहस्थ होते हैं, हर्षयुक्त रहते हैं और पत्नी वाले ही धन-सम्पन्न बनते हैं। ये प्रिय वचन बोलने वाली पत्नियां अकेलेपन में मनुष्य. की सच्ची मित्र होती हैं। धार्मिक कृत्यों में पितादि के समान आगे बढ़कर भाग लेती हैं और व्यक्ति के रोगी हो जाने पर माता के समान उसकी सेवा करती हैं। जंगलों में भी पथिक व्यक्ति के लिए पत्नी विश्राम देने वाली होती है। जो पत्नी वाला होता है वही विश्वसनीय होता है, इसलिए पत्नी ही परमगति है। पत्नी के अपेक्षित गुणों के सम्बन्ध में कहा गया है (महा आ०74-40) अर्थात् जो गृह-कार्य में निपुण है वही पत्नी है, जो संस्कारवान् सन्तानों वाली है वही पत्नी है, जो पति को अपने प्राणों के समान चाहती है वही पत्नी है और जो पतिव्रत धर्म का पालन करती है वही पत्नी है। द्रोपदी स्वयं अपने बारे में कहती हैं (महा०233-26,27) मैं (द्रोपदी) पात्रों को स्वच्छ रखने वाली, शुद्ध-पवित्र भोजन बनाने वाली, पति आदि को समय पर भोजन कराने वाली, संयम रखने वाली, अन्न को सुरक्षित रखने वाली, निवास-स्थान को धुला-लिपा रखने वाली, कभी तिरस्कारयुक्त वचन न बोलने वाली, दुष्ट स्त्रियों का संग न करने वाली, अपने पति के अनुकूल आचरण करने वाली और आलस्य न करने वाली बनने का सदा प्रयत्न करती हूँ। इस प्रकार के गुणों से परिपूर्ण पत्नी जहां स्वयं सुखी रहेगी वहीं अपने समूचे परिवार के लिए भी सुख एवं शान्ति की सुव्यवस्था कर सकेगी। स्त्री के सुख का आधार अपने पति के प्रति आत्मना समर्पण है। मनु महाराज कहते हैं-(मनु०9-11) (मनु०5-165) पत्नी अपने पति को धन के संभालने में, व्यय करने में, घर की पवित्रता के कार्य में, धार्मिक कृत्य में, भोजन पकाने में और गृह-उपकरणों के निरीक्षण करने में लगावे। जो पत्नी अपने मन, वणी और शरीर को वश में रखकर, अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरूष के साथ शरीर-सम्बन्ध नहीं रखती, वह अपने पति के प्राप्तव्य सभी सुखों को पाती है और सज्जनों के द्वारा 'साध्वी' कहलाती है।

जिस नारी को मध्यकाल में मात्र भोग की सामग्री भर समझा जाने लगा था, उन्हें पैरों की जूती और पत्थर तक की संज्ञा दी जाने लगी थी, उन्हें यज्ञोपवीत धारण करने तथा पढ़ने का अधिकार नहीं था ऐसे समय में महर्षि दयानन्द जी ने नारी के लिए मुक्ति के द्वार खोल दिए। उसे योज्ञपवीत धारण करने, यज्ञ करने, पढ़ने-पढ़ाने के ही अधिकार नहीं दिए बल्कि व्यवस्था दी कि-नारी को पिता, भाई, पति और देवर सत्कारपूर्वक भूषणादि से प्रसन्न रखें इसी से उनका कल्याण होगा। जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है वहां देवता निवास करते हैं, जहां इनका सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं... जहां नारी शोकाकुल होकर दु:ख पाती है वह कुल नष्ट हो जाता है... स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें। महर्षि जी के इस कथन में भी बहुत व्यवहारिकता और सार्थकता है क्योंकि नारी को विद्वान् व प्रसन्न रखने से ही वह बालकों की प्रथम गुरू बनकर उनमें अच्छे संस्कार स्थापित करने में समर्थ हो सकती है। पति-पत्नी को एक दूसरे के साथ पूर्णतया सहयोग से व्यवहार करना चाहिए। इस इसम्बन्ध में महर्षि जी कहते हैं-' ... जो एक-दूसरे के आधीन काम है, वह-वह आधीनता से ही करना चाहिए। जैसा कि स्त्री और पुरूष का एक-दूसरे के आधीन व्यवहार, अर्थात् स्त्री-पुरूष का और पुरूष-स्त्री का परस्पर प्रियाचरण, अनुकूल रहना, व्यभिचार वा विरोध कभी न करना।

पुरूष की आज्ञानुकूल घर में काम स्त्री, और बाहर के काम पुरूष के आधीन रहना, दुष्ट व्यसन में फंसने से एक-दूसरे को रोकना। अर्थात् यही निश्चय जानना कि जब विवाह होवे, तब स्त्री के साथ पुरूष और पुरूष के साथ स्त्री बिक चुकी। अर्थात् जो स्त्री और पुरूष के साथ हाव-भाव नखशिखाग्र-पर्यन्त जो कुछ हैं, वह वीर्यादि एक-दूसरे के आधीन हो जाता है। स्त्री वा पुरूष प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार न करें। इनमें बड़े अप्रियकारक व्यभिचार, वेश्या-परपुरूष-गमनादि काम हैं। इनको छोड़ के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पति सदा प्रसन्न रहें। पति-पत्नी को आपस में मीठा और धर्मयुक्त व्यवहार करना चाहिए। जो पति-पत्नी एक दूसरे को हृदय से प्यार नहीं करते वहां प्रसन्नता नहीं हो सकती है। पति-पत्नी को विवाह संस्कार की सभी प्रक्रियाएं स्मरण रखनी चाहिए क्योंकि उनमें ही उनके गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र छुपे हुए हैं। उन्होंने एक-दूसरे का सुख-दु:ख में सखा की तरह साथ निभाने की प्रतिज्ञा की है तथा यह भी कहा होता है कि आज से हम दोनों ऐसे मिल गए हैं जैसे दो स्थानों से लाया हुआ जल आपस में मिल जाता है। एक-दूसरे को छोटा या बड़ा समझने की जरूरत नहीं है बल्कि सहयोग और सेवा भाव से दोनों को गृहस्थ की गाड़ी को सुघड़ता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। व्यभिचार आदि से दूर रहकर तथा एक-दूसरे के प्रति विश्वास और प्रेम-युक्त कुशलातपूर्वक व्यवहार करके ही गृहस्थ को सुखी बनाया जा सकता है। सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले। एक-दूसरे को प्रसन्न करने के लिए किसी प्रकार के झूठ का सहारा न लें। हितकर बोलें और व्यर्थ के विवाद से बचें। जिस गृहस्थ में पति-पत्नी का व्यवहार इस प्रकार का रहेगा वहां किसी प्रकार का विरोधाभास या एक-दूसरे को त्यागने आदि की बात आ ही नहीं सकती है...

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी का वार्षिक उत्सव 2 दिसम्बर सें

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी का वार्षिक उत्सव 2 दिसम्बर से 9 दिसम्बर 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 2 दिसम्बर को सायं 5.30 बजे मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ज्योति प्रज्जवलित कर आदरणीय पं. हरबंस लाल जी शर्मा जी की मधुर स्मृति में भजन संध्या का शुभारम्भ करेंगे। तीन दिसम्बर से 8 दिसम्बर तक प्रात: 8.00 बजे से 9.00 बजे तक गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ किया जायेगा। प्रात: 9.00 बजे से 9.30 बजे तक यज्ञ प्रार्थना एवं भजन श्री सुरिन्द्र सिंह गुलशन व सोनू भारती जी के होंगे। प्रात: 9.30 बजे से 10.00 बजे तक आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के प्रवचन होंगे। इसी तरह सायं 6.00 बजे से 7.15 बजे तक भजन श्री सुरिन्द्र सिंह गुलशन व सोनू भारती जी के होंगे और सायं 7.15 बजे से रात्रि 8.00 बजे तक प्रवचन श्री आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के होंगे। मुख्य कार्यक्रम 9 दिसम्बर रविवार को प्रात: 9.00 बजे ध्वजारोहण श्री अमित सिंघल जी के कर कमलों से हुआ। 51 हवन कुण्डीय चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ की पूर्णाहुति समारोह प्रात: 9.30 बजे होगा जिसके यज्ञ ब्रह्मा आचार्य हंसराज शास्त्री होंगे। यजमानों को आशीर्वाद एवं प्रसाद वितरण प्रात: 11.00 बजे और आर्य सम्मेलन प्रात: 11.00 बजे से 12.30 बजे तक होगा। 1.00 बजे आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी धन्यवाद करेंगे और ऋषि लंगर होगा।

-रणजीत आर्य, प्रधान आर्य समाज

ऋषि निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व मनाया

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में ऋषि निर्वाण दिवस प्रधान श्री शशी कोमल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महायज्ञ से हुआ। श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओं ''मेरे ऋषि दयानन्द प्यारेया तेरी जिन्द हजारां नू तारया'' आदि सुन्दर भजनों से प्रोग्राम को मननशील आनन्दमय बना दिया।

मन्त्री श्री सजंय गोस्वामी जी ने मंच संचालन किया। प्रधान श्री शशी कोमल जी एवं स्वामी वेद भारती बिहार वाले ने ऋषि दयानन्द के बताएं मार्ग पर चलने का आहवान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य एवं महामन्त्री आर्य समाज पुरुषोतम जी ने दीपावली की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में शहर की सभी समाजों ने भाग लिया। इस सुअवसर पर वेद प्रचार मन्त्री डॉ. पवन त्रिपाठी उपप्रधान पवन टण्डन, कोषाध्यक्ष डॉ. रविकांत शर्मा, रविदत आर्य वेद मेहता, बलराज राणा जुली, मनु सेठ आदि आर्य महानुभाव उपस्थित रहे। शान्ति पाठऔर यज्ञशेष (प्रसाद) के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महामन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में प्रार्थना सभा

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में एक प्रार्थना संभा का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के प्रधान श्री शशी कोमल जी की धर्म पत्नी स्व. पूनम जी की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

इस प्रार्थना सभा में उन दिवंगत आत्माओं को भी याद किया गया जो जोड़ा फाटक अमृतसर में हुई दुर्घटना में मारे गये थे। इस भयानक रेल हादसे में मारे गये निर्दोषों की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना तथा हादसे में घायलों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की गई। इस मौके पर शहर की सभी समाजों ने भाग लिया।

इस प्रार्थना सभा में आर्य समाज के प्रधान शशी कोमल, संरक्षक ओम प्रकाश भाटिया, महामन्त्री पुरूषोतम चन्दशर्मा, संजय गोस्वामी उप-प्रधान पवन टण्डन, रविदत आर्य, रमन वाही, बलराज कुमार केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री राकेश मेहरा, आर्य समाज लक्षमणसर के प्रधान इन्द्रपाल आर्य, आर्य समाज नवांकोट पं० बनारशी दास श्री बाल किशन भगत आर्य समाज हरिपुरा से मेलाराम आर्य समाज पुतलीघर से प्रधान इन्द्रजीत तलवाड़, पं० मुरारीलाल श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय एवं वैदिक गर्ल्ज सी० सै० स्कूल का सारा स्टाफ इस प्रार्थना सभा में विशेष रूप से उपस्थित रहें। पं० तेजनारायण शास्त्री, पं० सिकन्दर पं० निरञ्जन कुमार, आचार्य पवन शर्मा ने मन्त्रोच्चारण और शान्ति पाठ किया।

डॉ. पवन त्रिपाठी

वेद प्रचार मन्त्री, आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में 11 नवम्बर को महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाया गया। आर्य समाज के पुरोहित श्री कृष्ण कान्त जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया जिसमें मुख्य यजमान के पद को आर्य समाज के मन्त्री श्री हरेन्द्र भारद्वाज ने सपरिवार सुशोभित किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री नारायण सिंह जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके संसार का बहुत उपकार किया है। हमें महर्षि दयानन्द के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना चाहिए। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के संरक्षक श्री सरदाना, ओ.पी. खना, जी. सी. तालुजा, सतपाल जौली व माता कान्ता भारद्वाज जी उपस्थित रहे। माता कान्ता भारद्वाज द्वारा विभिन्न स्कूलों से आए 50 छात्रों को स्वैटर दिये गये। प्रधान श्री सतीश अरोड़ा एवं मन्त्री हरेन्द्र भारद्वाज जी ने राजी खन्ना, सतपाल शर्मा, राजीव खन्ना, पंकज खन्ना, नितिन खन्ना व अभिषेक एवं समस्त खन्ना परिवार, डा सरदाना, डा गुलाटी परिवार, तरसेम लाल, अमन, प्रेम सागर, प्रेम प्रकाश, पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र मदान, डा. उमा दत्त पाठक, स्त्री आर्य समाज से आंचल, नरेश सहगल, स्नेह पाठक, आशा अरोड़ा, रेनू व मीनाक्षी, दीप्ति, पूनम खन्ना परिवार का उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने का स्वागत व धन्यवाद किया।

-हरेन्द्र भारद्वाज मन्त्री आर्य समाज नंगल टाऊनशिप

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विश्व को देन

30 अक्टूबर 1883 को महर्षि दयानन्द सरस्वती का निधन हुआ था। उन्होंने अपने 59 वर्ष के जीवन काल में यत्र-तत्र भ्रमण करके अनेक विद्वानों के पास रहकर शिक्षा पाई, देश में फैले हुए अविद्यान्धकार और पाखण्ड को साक्षात् देखा जनता की पीड़ा को अनुभव किया, देश को उन्नति पथ पर कैसे ले जाया जाये इसका भी विश्लेषण किया तथा सत्यासत्य के निर्णय की कसौटी प्राप्त की। उन्होंने आर्यजाति को भूला बिसरा जो ज्ञान पुनः प्राप्त कराया, उसका अति संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. वेद अपौरुषेय हैं, इनमें सभी सत्य विद्यायें हैं।
2. वेद में मूर्ति आदि जड़पूजा का विधान नहीं है। मूर्तिपूजा से देश पराधीन हुआ है।
3. ईश्वर एक है, उसका मुख्य नाम ओम् है, अन्य नाम उसके गुण कर्म स्वभावानुसार है।
4. ईश्वर कभी मनुष्यादि के रूप में अवतार नहीं लेता, वह सर्वव्यापक है।
5. ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनों पदार्थ अनादि हैं।
6. ईश्वर पापों को क्षमा नहीं करता, अपितु जीव के कर्मानुसार यथायोग्य फल देता है।
7. मृतकों के लिए किया गया श्राद्ध अवैदिक है।
8. जीवित माता-पिता-गुरु आदि की यथेष्ट सेवा करना सच्चा श्राद्ध है।
9. बालविवाह करना अधर्म है, युवावस्था में गुण कर्म स्वाभावानुसार विवाह करना श्रेष्ठ है।
10. विधवा को पुनर्विवाह की स्वीकृति होनी चाहिये।
11. पांच महायज्ञ करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है।
12. सतीप्रथा अवैदिक है।
13. यज्ञ में पशु की बलि देना पाप है।
14. अनाथ और अछूतों का उद्धार करना चाहिये।
15. मनुष्यमात्र को वेद पढ़ने सुनने का अधिकार है।
16. वेदों में किसी व्यक्ति या स्थान विशेष का इतिहास नहीं है।
17. मद्य-मांस तथा सभी प्रकार के नशे करना पाप है।
18. जादू-टोने, भूत-प्रेत, ग्रह नक्षत्र द्वारा पीड़ा होना, हस्तरेखा से कर्मफल मानना आदि पाखण्ड है।
19. गाय, बकरी आदि सभी पशु तथा मुर्गे, मछली आदि प्राणियों की हत्या नहीं करनी चाहिये।
20. पुराण, बाइबिल, कुरान आदि अनार्ष ग्रन्थ जीवन को अन्धकार की ओर ले जाते हैं।
21. वेद से अतिरिक्त अन्य मत-मतान्तर व्यक्ति को सच्चाई से दूर ले जाने वाले हैं।
22. आर्षग्रन्थों का पठन-पाठन तथा तदनुसार आचरण करना चाहिये।
23. योगाभ्यास के द्वारा मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, किसी गुरु का नाम लेकर पापों से छुटकारा नहीं मिलता।

आर्य समाज दीनानगर में वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन

आर्य समाज मन्दिर में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी सर्वानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में 1 नवम्बर से 6 नवम्बर तक होने वाले कार्यक्रम में बोलते हुए दिल्ली से पधारे डॉ. वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि अगर मानव महर्षि दयानन्द जी के जीवन मूल्यों को अपने जीवन में धारण कर लेता है तो ज़िन्दगी में कभी असफल नहीं हो सकता। इस 6 दिवसीय कार्यक्रम में पानीपत से पधारे पंडित राम निवास आर्य के मधुर भजनों को आर्य जनता ने बहुत सराहा। इसके अतिरिक्त दिल्ली से पधारे स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने इन 6 दिनों में अपने व्याख्यान में अन्ध विश्वास एवं भ्रान्ति निवारण विषय पर अपने विचार रखें। आर्य जनता पर स्वामी जी के विचारों का काफी प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज की ओर से विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में भी इन विद्वानों के प्रवचन करवाए गए। सभी आर्यजनों ने इस बार के कार्यक्रम की भूरि प्रशंसा की। आर्य समाज के अध्यक्ष रघुनाथ सिंह शास्त्री ने सभी नगर निवासियों का जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपना योगदान दिया, तहे दिल से धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्य समाज के सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, अरूण विज, वेद प्रकाश ओहरी ईश्वर भल्ला, बाबा लाल महाजन, सतपाल शर्मा, लगन, योगेन्द्र पाल गुप्ता, यतीन्द्र शास्त्री, रमेश शास्त्री, हरीश, कमल किशोर गुप्ता, हर्ष आर्य, अनिकेत, अभिषेक, कैलाश आदि बहुत से आर्य जनों ने भाग लिया।

-रमेश महाजन, सचिव आर्य समाज दीनानगर

वेद हमें मानवता की शिक्षा देते हैं: प्रेम भारद्वाज

आर्य समाज, आर्य समाज चौक पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ के आयोजन का समापन समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के महामंत्री प्रेम भारद्वाज जी आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में आर्य जनता को सम्बोधित करते हुये जबकि चित्र दो में आर्य जन ऋग्वेद परायण महायज्ञ की पूर्णाहुति डालते हुये व चित्र तीन में समारोह में पधारी हुई आर्य जनता।

आर्य समाज मंदिर पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के महामंत्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया। चारों वेद सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण के लिये हैं। उनमें जात-पात, ऊंच-नीच, स्थान, मजहब, सम्प्रदाय आदि के नाम से कोई भेदभाव नहीं है। वह मानवता की शिक्षा देते हैं। आर्य समाज द्वारा वेद मार्ग पर चलते हुये आर्य समाज ने देश की आजादी और समाज सुधार के लिये कई आन्दोलन किये और हमेशा देश, धर्म और समाज की उन्नति के लिये काम किया है। इससे पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व के सर्वश्रेष्ठ कर्म वैदिक यज्ञ वेद मंत्रों के साथ किया गया। आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विश्व के कल्याण की मंगलकामनाएं करते हुये यज्ञ अग्नि में आहुतियां प्रदान की। इस सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ में बतौर यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रमुख प्रवक्ता शिरकत करने मेरठ से पधारे आचार्य संजय याज्ञिक जी ने कहा कि संसार को समझने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि धर्म का सम्बन्ध आचरण से है। अपने कर्त्तव्य को ईमानदारी से पालन करने वाला व्यक्ति ही सही अर्थों में धार्मिक है। धर्म का सम्बन्ध पूजा पाठ से नहीं है, परोपकार ही धर्म है, यही वेदों का संदेश है, ऋषि मुनियों ने भी यही सिखाया है। कार्यक्रम के संयोजक बिजयेन्द्र शास्त्री एवं प्रधान राज कुमार सिंगला ने विभिन्न आर्य समाजों राजपुरा, समाना, सरहिन्द, सन्नौर, नाभा, चीका, चण्डीगढ़ आदि से पधारे सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। इस मौके पर विवेक तिवारी एवं एस.आर. प्रभाकर प्रिंसीपल एवं पूर्व प्रिंसीपल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटियाला, डा. संजय सिंगला अध्यक्ष हृदय विभाग राजिन्द्रा अस्पताल व डा. सुनील आर्य पेट रोग विशेषज्ञ पटियाला को आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने के लिये विशेष तौर पर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला ने बताया कि इस आर्य समाज में साल में दो बार पूरे सप्ताह तक चलने वाले कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। सभी का धन्यवाद प्रकट किया गया। मुख्य अतिथि तथा विशेष अतिथि को शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट किये। इस अवसर पर वीरेन्द्र सिंगला, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, कर्नल आनन्द मोहन सेठी, प्रवीण कुमार आर्य, डा. ओम देव आर्य, प्रवीण चौधरी, रमेश गंडोत्रा, प्रो. के.के. मोदगिल, गुलाब सिंह, दिलीप कुमार, फकीर चंद शर्मा, अमित धबलानिया, नरेश कुमार, डा. रमण वर्मा, यशपाल जुनेजा, अरुण आर्य, गजेन्द्र शास्त्री, प्रिं. संतोष गोयल, श्रीमती प्रेम लता सिंगला, संगीता सिंगला, वैजयन्ती माला सेठी, सरिता आर्य, नरेश बाला आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

राज कुमार सिंगला प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज धूरी का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज धूरी का वेद सप्ताह उत्सव 14 नवम्बर से 18 नवम्बर 2018 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री आचार्य देवव्रत जी विशेष रूप से पधारे। चित्र में आर्य समाज के अधिकारी स्वागत करते हुये।

आर्य समाज धूरी का वेद सप्ताह उत्सव 14 नवम्बर से 18 नवम्बर 2018 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पहले दिन ध्वजारोहण और गायत्री मंत्र का उच्चारण करने के बाद सारे धूरी शहर में बहुत ही धूमधाम से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। ओ३म् के ध्वज उठाये बच्चे और बड़े पूरे जोश से सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय और आर्य समाज अमर रहे के नारे लगा रहे थे। श्री दिनेश पथिक जी ने अपने भजनों से सब को मंत्रमुग्ध कर दिया और आर्य समाज का खूब प्रचार किया।

15 नवम्बर 2018 दूसरे दिन के कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ जिनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने संदेश में स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन करते हुये बच्चों को बहुत ही प्रेरणादायक बातें बताईं।

दिनांक 17 नवम्बर 2018 को हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल एवं परमपूज्य आचार्य देवव्रत जी मुख्य मेहमान रहे। उनका स्वागत आर्य समाज धूरी द्वारा बहुत उत्साह से किया गया। शहर से आए अलग अलग संस्थाओं के प्रमुखों ने भी माननीय राज्यपाल जी का स्वागत किया। आचार्य जी ने अपने सम्बोधन में सबसे पहले कहा कि मेरा पद जरूर बदला है मगर व्यक्तित्व नहीं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज धूरी और जहां के लोगों से मेरा प्रेम और स्नेह आज भी उतना ही है जितना पहले था। परमपूज्य स्वामी चैतन्य मुनि जी अपने प्रवचनों द्वारा लगातार सुबह शाम दोनों समय बहुत ही सरल शब्दों में वेदों के ज्ञान की अमृत वर्षा कर रहे हैं। स्वामी जी ने हवन के बारे में बताया कि जो लोग अपने घर में रोज हवन करते हैं वह सुख समृद्धि को प्राप्त होते हैं और सदा निरोग जीवन व्यतीत करते हैं और अग्निहोत्र स्वर्ग की सीढ़ी है। उन्होंने यह भी बताया कि हवन से बढ़ कर कोई और दान नहीं क्योंकि हवन करने से जो वातावरण शुद्ध होता है उसका लाभ हर जीवधारी को प्राप्त होता है। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोंपदेशक संगीतरत्न दिनेश पथिक जी के भजनों की धूरी शहर में धूम मची रही। बच्चे, बहिनें एवं बड़े सब पथिक जी के भजन शुरू होते ही झूमने लगते थे। श्री पथिक जी ने अपने भजनों के माध्यम से बच्चों को बहुत ही प्रेरणादायक संदेश भी दिये। बाहर से भी बहुत सी आर्य समाजों के अधिकारी समय समय पर पधार कर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते रहे।

महाशय सोम प्रकाश महामंत्री-धूरी

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।